International Journal of Sanskrit Research 2019; 5(5): 126-128

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2019; 5(5): 126-128
© 2019 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-07-2019
Accepted: 12-08-2019

डॉ. मोना बाला
एम.ए.(संस्कृत), पी–एच.डी.
गेस्ट फैकल्टी, संस्कृत स्नातकोत्तर विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

Correspondence
डॉ. मोना बाला
एम.ए.(संस्कृत), पी–एच.डी. गेस्ट फैकल्टी, संस्कृत स्नातकोत्तर विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

भारतीय भाषाओं का उद्भव एवं विकाश

डॉ. मोना बाला

सरांश
मानवीय सभ्यता में मनुष्य अपने भावों के सम्प्रेषण हेतु भाषा का प्रयोग करता है। ये भाषाएँ अपने में सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक तत्त्वों को समाहित कीये होती है। भाषाओं के अध्ययन से उस भाषा की मूल प्रवृत्ति एवं विकास का पता चलता है। भारतीय भाषाओं का उत्पत्ति, विकास एवं विकास की प्रवृत्ति का अध्ययन रोचक है। जिस भाव में हम अपने भावों का सम्प्रेषण करते हैं उन भाषा को जानने का कौतूक उत्साह का सृजन करता है।

कूट शब्दः भाषा, भारोपीय, अपभ्रंश, संस्कृत, भारतीय भाषाएँ

प्रस्तावना
मानव अपने भावों के प्रेषण के लिए किसी भाषा का उपयोग करता है। मानवीय जीवन में भाषा का महत्व इस बात से समझा जा सकता है। भाषा प्रारम्भिक रूप में भावों का प्रेषण करती हैं साथ ही भाषा मानव के सांस्कृतिक, समाजिक एवं भौगोलिक महत्त्व की संपोषक होती है। भारत में बोली, सुनी जाने वाली भाषा का उद्भव कैसे हुआ होगा एवं उसका विकाश कैसे हुआ होगा। यह बात मन में कौतूक उत्पन्न करता है। भारत वर्ष में कई भाषाएँ बोली जाती है, इसके बोलने–समझने वाले लोगों की एक अच्छी खासी संख्या है। भारत वर्ष में समय–समय पर कई जातियाँ आती रही। उनके साथ भाषाएँ भी आई और उन भाषाओं ने भी अपना स्थान बनाया साथ ही वो मूल भाषाओं से मिल गयीं।
भाषा को परिभाषित करते हुए कहा गया है– A language is a system of arbitrary vocal symbols by means of which a social group co-operates.[1] अर्थात् भाषा एक पद्धति है, भाषा संकेतात्मक, भाषा वाचिक ध्वनि संकेत है भाषा यादृच्छिक (ऐच्छिक) संकेत है।
भाषाओं के कई आधार हो सकते हैं इतिहास, भूगोल, प्रयोग, निर्माता मूल भाषा एवं परिष्कृत भाषा। भारत में 1991ई. के जनगणना के अनुसार 10400 मातृ भाषाओं के अपरिष्कृत आकड़े सामने आये उन्हें 1576 मातृ भाषाओं में समायोजित किया गया उन्हें उससे आगे 216 मातृ भाषाओं में तार्किक आधार पर उचित ठहराया और उन्हें 114 भाषाओं के अन्तर्गत वर्गीकृत किया गया। 2001 के जनगणना के अनुसार 122 भाषाओं को 5 वर्गों में रखा गया है [2]–

भाषाओं की संख्या

1.	इण्डो–यूरोपियन	
	(क) इण्डो–आर्यन	21
	(ख) ईरानियन	02
	(ग) जर्मनिक	01
2.	द्राविड़यन	17
3.	अस्ट्रो–एशियाटिक	14
4.	तिब्बतो–वर्मिज	66
5.	सेमितो–हेमेटिक	01

भारत की कुल आबादी का लगभग 76.87 प्रतिशत लोग इण्डो–आर्यन भाषा समूह में आते हैं। 20.82 प्रतिशत द्राविड़यन भाषा समूह में आते है।
विद्वानों ने भाषा का पारिवारिक वर्गीकरण किया है। जिसमें भारतीय भाषा को भारोपीय वर्ग के रूप में स्थान प्राप्त हुआ है। इसवर्ग में भारत और यूरोपीय भूखण्ड की भाषा आती है। भाषा का भौगोलिक

विस्तार बहुत बड़ा है। भारोपीय भाषाओं को ध्वनि के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है। प्रो. अस्कोली ने केन्दुम् एवं शतम् (सतम्) नाम से दो वर्ग बनाए।

भारोपीय भाषा

शतम् वर्ग	केन्दुम् वर्ग
1. संस्कृत	1. लौटिन
2. अवेस्ता	2. ग्रीक
3. फारसी	3. केल्टिक
4. हिन्दी	4. तोखारी
5. रूसी	5. गाथिक
6. लिथुआनियन	6. जर्मन
	7. फ्रेंच
	8. इटालियन

शतम् वर्ग की प्रतिनिधि भाषा संस्कृत है संस्कृत भारत की सर्व प्राचीन भाषा रही है संस्कृत भाषा को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– 1.वैदिक संस्कृत एवं 2.लौकिक संस्कृत।

वैदिक संस्कृत में विश्व के प्राचीनतम साहित्य वेद रचे गये है। वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में व्याकरण संबंधी अनेक भिन्नता दृष्टिगत होती है। कालक्रमानुसार लौकिक संस्कृत में अनेक ऐसे शब्द रूप का नया विकाश हुआ। कुछ शब्द जो वैदिक संस्कृत में प्रचलन में थे वे लौकिक संस्कृत में प्रचलित नहीं रहे। वैदिक संस्कृत से लौकिक संस्कृत काल तक आते–आते अनेक शब्दों के अर्थो में, रचना विधि में एवं विषय प्रतिपादन शैली में पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर होता है। वैदिक संस्कृत में 'देवेभिः, देवैः दोनों मान्य हैं वही लौकिक संस्कृत में देवैः शब्द ही मान्य एवं प्रचलित है।

लौकिक संस्कृत में साहित्य की श्रीवृद्धि हुई। साहित्य समाज का दर्पण है उसमें एक देश का उत्थान–पतन, हर्ष–विषाद, समृद्धि–विवृद्धि का उज्ज्वल चित्र देखने को मिलता है। लौकिक संस्कृत में महाकाव्य, काव्य, गीति काव्य, नाट्य साहित्य, चम्पू काव्य, गद्य साहित्य, नीति काव्य, साहित्यशास्त्र, कथा साहित्य, ऐतिहासिक साहित्य लिखे गए। यह साहित्य पूर्ण एवं प्रसशंनीय था। इस साहित्य में पूर्ण रूप मानव के भावों का प्रकटीकरण व्याप्त है जो मन में उत्सुकता एवं आनन्द का संचार करता है।

लौकिक संस्कृत का आरम्भ आदि कवि वाल्मीकि कृत रामायण से मान्य है। इसमें महाभारत, पुराण, काव्य, नाटक से लेकर अविच्छिन्न रूप से अबतक है। लौकिक संस्कृत में शब्दरूपों एवं धातुरूपों में वैकल्पिक रूप में कमी आयी। सन्धि नियमों की अनिवार्यता हुई। लेट् लकार का अभाव हुआ, ल् एवं ळ् ,ळ्ह शब्द नहीं रहे। भाषा में उदात्त आदि स्वरों का समापन हुआ। उपसर्गों का स्वतंत्र प्रयोग बन्द हो गया। संगीतात्मक स्वर के स्थान पर बलाघात स्वर आए।

विद्वानों ने मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाएँ को तीन भागों में बाँटा–

1. प्राचीन प्राकृत या पालि
2. मध्यकालीन प्राकृत एवं
3. परकालीन प्राकृत या अपभ्रंश

पालि भाषा में बौद्ध ग्रन्थों की रचना हुई एवं जैन ग्रन्थों की रचना भी इसी भाषा में हुई।

प्राकृत में बहुत सारी रचनाएँ हुई। विद्वानों ने प्राकृत की व्युत्पत्ति को लेकर तीन मत दीए–

1. प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है।
2. प्राकृत प्राचीन जनभाषा रही है।
3. प्राकृत और संस्कृत की स्वतंत्र परम्परा रही है।

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने प्राकृत को जनभाषा माना उन्होंने इस विषय पर विचार करते हुए संस्कृत जब साहित्यिक के रूप में रह गई एवं संस्कृत में अशुद्ध उच्चारण होने लगे तब प्राकृत जनसाधारण की भाषा बनी।[3] शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्धमागधी एवं पैशाची इन प्राकृत भाषाओं में भी रचनाएँ हुई। इन्हीं प्राकृत भाषाओं से अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। ये अपभ्रंश थे– 1.शौरसेनी, 2.महाराष्ट्री, 3.मागधी, 4.अर्धमागधी, 5.पैशाची, 6. ब्राचड एवं 7.खस।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ इन्हीं अपभ्रंशों से उत्पन्न हुई। पश्चिमी हिन्दी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। इसके अन्तर्गत खड़ी बोली, ब्रज भाषा, बाँगरू, कन्नौजी और बुन्देली। खड़ी बोली उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में बोली जाती है। खड़ी बोली की आदिकालीन रूप गोरखनाथ, अमीर खुसरो, रामानन्द, कबीर, रैदास आदि के रचना में उपलब्ध हैं। ध्वनि की दृष्टि से अपभ्रंश की तुलना में दो नई ध्वनियाँ आ गई हैं। ये दो स्वर हैं– ऐ तथा औ।

ब्रजभाषा मथुरा, आगरा, अलीगढ़ के ईलाके में बोली जाती है। इसमें भी उच्चकोटि का साहित्य उपलब्ध है। सूरदास, नन्ददास, मीराबाई, केशव, बिहारी, भूषण, घनानन्द, रसखान, रहीम आदि की रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। ब्रजभाषा अपभ्रंश से बहुत प्रभावित है। इसके सभी रूपों का समुचित विकास नहीं हो सका। इस भाषा में सर्वनाम के रूप में हउँ, मई, मो, मोरो, मोहि, मोरी आदि शब्द का प्रयोग होता है।

हिन्दी भाषा के मध्यकाल में अवधी भाषा ने प्रतिनिधित्व दिया। अवधी उत्तर कोसल में बोली जाती थी। कुछ विद्वानों ने अर्धमागधी से इसकी उत्पत्ति बताई है वही डॉ. भोला नाथ तिवारी ने इसे कौसली से विकसीत माना है।[4] अवधी में रची गई प्रसिद्ध रचना गोस्वामी तुलसीदास की रामचरितमानस है।

मराठी का नाम महाराष्ट्री से संबंधित है। महाराष्ट्री प्राकृत तत्कालीन महाराष्ट्र की भाषा थी। मराठी साहित्य का प्रारम्भ 12वीं सदी से है। इसमें ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ आदि की रचनाएँ हैं। ग्रियर्सन ने मराठी की लगभग 39 बोलियों का उल्लेख किया है।

बंगला, असमी, उड़िया का उद्भव मागधी अपभ्रंश से माना जाता है। बंगाली शब्द का सम्बन्ध बंगाल के प्राचीन नाम 'बंग' से है। यह भाषा भारत के पूर्वी क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें लिखित साहित्य 14वीं सदी का है। बंगाली में चण्डीदास, कृत्तिवास, बकिमचन्द्र, रवीन्द्र नाथ टैगोर, शरत्चन्द्र आदि की रचनाएँ हैं। असमी असम राज्य में बोली जाती है। सर एडवर्ड गेट के अनुसार 'असम' नामांकन संस्कृत के शब्द असम से माना है जिसका अर्थ होता है जिसके बराबर कोई न हो, वही ग्रियर्सन महोदय ने कबीले शम से असम शब्द की उत्पति माना है।[5] इसकी लिपि बंगला के सदृश है। इसमें माधवराम, शंकरदेव आदि की रचना प्राप्त होती है। उड़िया जो उड़ीसा प्रान्त की भाषा है। कुछ विद्वानों ने ओड्र को संस्कृत शब्द ओड्र से माना है। ओड्र विष – औषि – ओडिसा। इस भाषा में सारलादास का साहित्य, बलरामदास, सालबाग की रचनाएँ हैं। इस भाषा पर बंगला और तेलुगु का अधिक प्रभाव है। इसकी लिपि 'उत्कल' है।

बिहार में बोली जाने वाली मुख्यतः तीन भाषा है–मगही, भोजपुरी तथा मैथिली। असके अलावे अंगिका एवं ब्रजिका भी बोली जाती है। ये भाषाएँ मागधी अपभ्रंश से निकली हैं। भोजपुरी भाषा बिहार के भोजपुर क्षेत्र एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में बोली जाती है। भोजपुरी भाषा का प्रसार भारत वर्ष के अलावे मॉरिशस, सूरिनाम आदि देशों में भी है।

मैथिली भाषा बिहार के मिथिला क्षेत्र के साथ नेपाल के तराई क्षेत्र में बोली जाती है। इस भाषा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध हैं। इस भाषा में विद्यापति की रचनाएँ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं।

मगही भाषा बिहार के मगध क्षेत्र में बोली जाती है। इस क्षेत्र में कैथी लिपि प्रचलन में था परन्तु वर्त्तमान समय में यह लिपि विलुप्त होने की स्थिति में है। इस भाषा में भी प्रचुर मात्रा में साहित्य उपलब्ध है।

राजस्थानी भाषा मुख्यतः राजस्थान राज्य में बोली जाती है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। पिंगल का अनुकरण कर राजस्थानी में 'डिंगल' काव्य उपस्थित है। गुजराती भाषा गुजरात क्षेत्र की भाषा है, इसका विकास भी शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। गुजराती की स्वतंत्र लिपि है जो देवनागरी से विकसीत हुई है। गुजराती एवं राजस्थानी में भी साहित्य उपलब्ध है।

लहँदा का विकास पैशाची अपभ्रंश से हुआ है। यह पंजाब के पश्चिमी भाग में बोली जाती है। जबकि पंजाब में पंजाबी भाषा बोली जाती है। इसमें संस्कृत और प्राकृत के अधिक शब्द हैं। सिन्धी भाषा का विकास ब्राचड अपभ्रंश से है। 'शाहजी विसालो' का ग्रन्थ उल्लेखनीय है। पहाड़ी क्षेत्र की भाषा पहाड़ी खस अपभ्रंश से विकसीत है। इसमें पहाड़ी इलाके की 30 बोलियों का समूह है। इनमें से गढ़वाली एवं कुमायूँनी भाषा में ही साहित्य उपलब्ध है।

भारोपीय परिवार की भाषा पर विचार कर लेने के बाद द्रविड़ परिवार की भाषा पर विचार करने की आवश्यकता है। दक्षिण भारत में बोली जाने वाली भाषा तमिल, तेलुगु, कन्नड़ एवं मलयालम द्रविड़ परिवार की भाषा में आती है।[6] तमिल भाषा मुख्यतः तमिलनाडू प्रांत तथा उत्तरी श्रीलंका में बोली जाती है। इस भाषा में विस्तृत साहित्य उपलब्ध है। तिरूवल्लुवर तथा नाच्चियार की रचना इसी भाषा में है। मलयालम वस्तुतः प्राचीन तमिल की एक शाखा थी जो 9वीं सदी में अलग हो गई। यह भाषा मुख्यतः आधुनिक केरल तथा लक्षद्वीप में बोली जाती है। मलयाली में रामप्पाणिकर का साहित्य उल्लेखनीय है। कन्नड़ भी अपने उद्‌भव एवं विकास में तमिल, मलयालम से सन्निकट है। कन्नड़ साहित्य का स्वर्णकाल पम्पकाल को माना जाता है। तेलुगु भाषा आन्ध्र प्रदेश में बोली जाती है। तेलुगु में शिलालेख एवं साहित्य उपलब्ध है।[7] इसमें त्यागराज का साहित्य प्रसिद्ध है। भारत वर्ष में बहुत सारी जनजातियॉ हैं उनकी अपनी भाषायें हैं, इसमें प्रमुखतः गोंडी, कुरूख या ओराओं, ब्राहुई भाषाएँ हैं। जो द्रविड़ परिवार से जुड़ी भाषाएँ हैं इन भाषा में ए–ऍ, ओ–ओं, ह्रस्व एवं दीर्घ दोनों होते हैं। इन भाषाओं में स्वर अनुरूपता है और अन्तिम व्यंजन में अतिलघु 'अ' जोड़ा जाता है। इन भाषाओं में टवर्ग ध्वनि की प्रधानता होती है। मुण्डा परिवार की सन्थाली भाषा को मध्य योगात्मक भाषा में स्थान प्राप्त है, जैसे सन्थाली में मंझि शब्द का अर्थ मुखिया होता है इस भाषा में बहुवचन हेतु मंपझि शब्द प्रयुक्त होता है।[8] यहॉ शब्द के बीच में प शब्द लगने से बहुवचन अर्थात् 'मुखिये' अर्थ हुआ। डॉ. टी.बरो ने मुण्डा या कोल भाषाओं को महत्त्वपूर्ण माना है क्योंकि इससे इस बात की पुष्टि होती है कि इन भाषाओं से भारतीय आर्य भाषाएँ प्रभावित हुई।[9]

विश्व में ऐसी कई भाषाएँ है जो अपने मूल स्थान से यात्रा करते हुए अन्य राष्ट्रों में प्रमुखता से बोली जाती है। भाषाओं की वृद्धि में राजश्रय का भी योगदान रहता है बहुत ध्यान से देखें तो वही भाषाएँ जीवित रही जिन्हें राजकार्य में प्रयुक्त एवं कुशल संरक्षण प्राप्त रहा। बिहारी भाषा पर ध्यान देने से स्पष्ट हो जाता है कि मगही, मैथिली एवं भोजपुरी अपने अस्तित्व को बनाएं रखने में सफल रही एवं अपने राष्ट्र से अन्य राष्ट्र में प्रमुखता से बोली जाने वाली भाषा बनी। भोजपुरी यहॉ के मजदूर वर्ग के साथ मॉरिसस, सूरिनाम पहुँची, कालक्रम से इसके बोलने वाले राजसत्ता के शीर्ष पर पहुँचे अब भोजपुरी उन राष्ट्रों में प्रमुखता से बोली जाती है।

वैसे तो भाषा के उद्‌भव की मूल पहचान करना मुश्किल कार्य है लेकिन इस क्षेत्र में समय–समय पर कार्य होते रहे हैं एवं भाषा के मूल के विषय में रोचकता से अध्ययन हुआ है लेकिन भाषाएँ एक–दूसरे के सम्पर्क में आकर एक दूसरे की निकटता से शब्दों का आदान–प्रदान करते हैं। भाषा में हमारे सांस्कृतिक ऐतिहासिक एवं भौगोलिक बोध का संचार छिपा है।

संदर्भ

1. Out Line of Linguistic Analysis, B.Bloch and G.L.Trager, p-5
2. https://mhrd.gov.in/hi/language-education-hi
3. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र– डॉ.कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्भा प्रकाशन, पृ.सं.–432
4. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– डॉ. भोला नाथ तिवारी, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, पृ.सं.–85
5. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– डॉ. भोला नाथ तिवारी, पृ.सं.–88.
6. संस्कृत भाषा– डॉ. टी. बरो, चौखम्भा विद्याभवन, पृ.सं.– 94
7. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास– डॉ. भोला नाथ तिवारी, पृ.सं.–94
8. भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र– डॉ.कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्भा प्रकाशन, पृ.सं.–362
9. संस्कृत भाषा– डॉ. टी. बरो, पृ.सं.– 454